IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 11, Issue 6, November - December 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

सवाईमाधोपुर जिले में जैविक कृषि के विकास की संभावनाएं

डॉ. ओमप्रकाश कोली

सहायक आचार्य, टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बोली, सवाईमाधोपुर

सारांश

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संतुलन, भूमि की उर्वरता, और स्वस्थ जीवनशैली की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण जैविक कृषि का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न समस्याओं, जैसे मृदा अपरदन, जल प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं, ने जैविक खेती की ओर ध्यान आकर्षित किया है। जैविक कृषि एक टिकाऊ कृषि प्रणाली है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों और परंपरागत तरीकों का उपयोग कर भूमि की उर्वरता बनाए रखने और सुरक्षित खाद्य उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाता है। भारत, जिसकी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है, जैविक खेती की अपार संभावनाएँ रखता है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जैसे ''परम्परागत कृषि विकास योजना'' (PKVY) और ''राष्ट्रीय जैविक कृषि परियोजना'' (NMSA), इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, उपभोक्ताओं में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता और जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग ने जैविक कृषि के विकास के अवसरों को और भी विस्तारित किया है। सवाईमाधोपुर जिला, राजस्थान का एक महत्वपूर्ण कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहां परंपरागत कृषि पद्धतियों का प्रचलन है। हालांकि, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इस समस्या के समाधान के रूप में जैविक कृषि एक स्थायी और पर्यावरण अनुकूल विकल्प के रूप में उभर रही है। यह शोध–पत्र सवाईमाधोपुर जिले में जैविक कृषि के विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। इसमें जैविक कृषि के लाभ, चुनौतियों, और इसके प्रसार के लिए आवश्यक रणनीतियों पर चर्चा की गई है। साथ ही, स्थानीय किसानों, सरकारी नीतियों, और गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका को भी रेखांकित किया गया है।

मूल शब्द – जैविक कृषि, पर्यावरणीय संतुलन, भूमि की उर्वरता, टिकाऊ कृषि प्रणाली

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

परिचय

जैविक कृषि एक कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, और जीन संशोधित जीवों (GMOs) का उपयोग नहीं किया जाता है। इसके बजाय, इसमें प्राकृतिक संसाधनों जैसे कंपोस्ट, हरी खाद, जैविक उर्वरक, और जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। जैविक कृषि का उद्देश्य मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना, पर्यावरण को संरक्षित करना, और स्वस्थ खाद्य उत्पादन करना है। आधुनिक समय में जहां एक ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण प्रदूषण, मिट्टी की उर्वरता में कमी, और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी बढ़ी हैं। इन समस्याओं का एक प्रमुख कारण रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग है। ऐसे में जैविक कृषि एक स्थायी और पर्यावरण अनुकूल विकल्प के रूप में उभर रही है। जैविक कृषि न केवल पर्यावरण को बचाने में मदद करती है, बल्कि यह मानव स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। यह लेख जैविक कृषि की आवश्यकता और इसके लाभों पर प्रकाश डालता है। सवाईमाधोपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है और यहां की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। यहां गेहूं, मक्का, चना, सरसों, और बाजरा जैसी फसलों की खेती की जाती है। हालांकि, पारंपरिक कृषि पद्धतियों में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसके अलावा, किसानों की आय में स्थिरता की कमी और उत्पादन लागत में वृद्धि ने कृषि क्षेत्र को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। इन समस्याओं के समाधान के लिए जैविक कृषि एक प्रभावी विकल्प के रूप में उभर रही है। जैविक कृषि न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि यह किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के लिए बेहतर मूल्य दिलाने में भी सक्षम है।

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- सवाईमाधोपुर जिले में जैविक कृषि के वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
- जैविक कृषि के लाभ और चुनौतियों का विश्लेषण करना।
- जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी योजनाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- स्थानीय किसानों की जैविक कृषि के प्रति जागरूकता और रुचि का अध्ययन करना।
- जैविक कृषि के प्रसार के लिए संभावित रणनीतियों और नीतिगत सुझावों को प्रस्तुत करना।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

आंकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र :

प्रस्तुत शोध–पत्र के लिए आंकड़ों का संकलन निम्न प्रकार किया गया है–

प्राथमिक स्रोत – स्थानीय किसानों, कृषि विशेषज्ञों, और गैर–सरकारी संगठनों के साथ साक्षात्कार और सर्वेक्षण।

द्वितीयक स्रोत : भारत सरकार के कृषि मंत्रालय और राजस्थान सरकार के कृषि विभाग की रिपोर्ट्स।, जैविक कृषि से संबंधित शोध पत्र और लेख।, सवाईमाधोपुर जिले के कृषि आंकड़े और सांख्यिकीय रिपोर्ट्स।, फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (FAO) और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्ट्स।

अध्ययन क्षेत्र :

राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित सवाईमाधोपुर जिला अवस्थिति एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राज्य के समस्त जिलों में अपना महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान रखता है। अवस्थिति की दृष्टि से यह जिला 25 डिग्री 58 मिनट उत्तरी अक्षाश से 27 डिग्री 83 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं 75 डिग्री 53 मिनट से 78 डिग्री 17 मिनट पूर्वी देशांतरों के मध्य स्थित है। मानक समुद्र तल से जिले की ऊंचाई 100 मीटर है तथा जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4498 वर्ग किलोमीटर है। सवाई माधोपुर जिला उत्तर दिशा में भरतपुर, धौलपुर एवं दौसा जिले द्वारा, उत्तर पूर्व मे करौली जिले द्वारा उत्तर पश्चिम में जयपुर जिले द्वारा, दक्षिण पूर्व मे कोटा जिले द्वारा, दक्षिण में बूंदी जिले द्वारा तथा पश्चिम में टोंक जिले द्वारा सीमांकित है। प्रशासनिक दृष्टि से सवाई माधोपुर जिला सात तहसीलों सवाई माधोपुर,चौथ का बखाड़ा, खण्डार, मलारनाडूंगर, गंगापुर, बौली, एवं बामनवास मे विभाजित है। रणथमबोर राष्ट्रीय उद्यान होने के कारण यह जिला विश्व प्रसिद्ध है। जिले में कुछ हिस्से में मैदानी एवं कुछ क्षेत्र मे पहाड़ी भाग का विस्तार पाया जाता है। जिले मे ग्रीष्म ऋतु मे अधिकतम औसत तापमान 48 डिग्री तक रहता है जबकि शीत ऋतु में जिले में न्यूनतम औसत तापमान 4 डिग्री तक रहता है। जिले मे वर्षा का वार्षिक औसत 72 से.मी. तक रहता है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 1335551 थी जिसमे से पुरुषों एवं स्त्रियॉ की जनसंख्या क्रमशः 704031 एवं 631520 थी। जिले मे वर्ष 2011 के आंकड़ो के अनुसार 1069084 ग्रामीण जनसंख्या एवं 266467 नगरीय जनसंख्या थी जबकि जिले में जनसंख्या का घनत्व 265 पाया गया है एवं लिंगानुपात 897 पाया गया है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

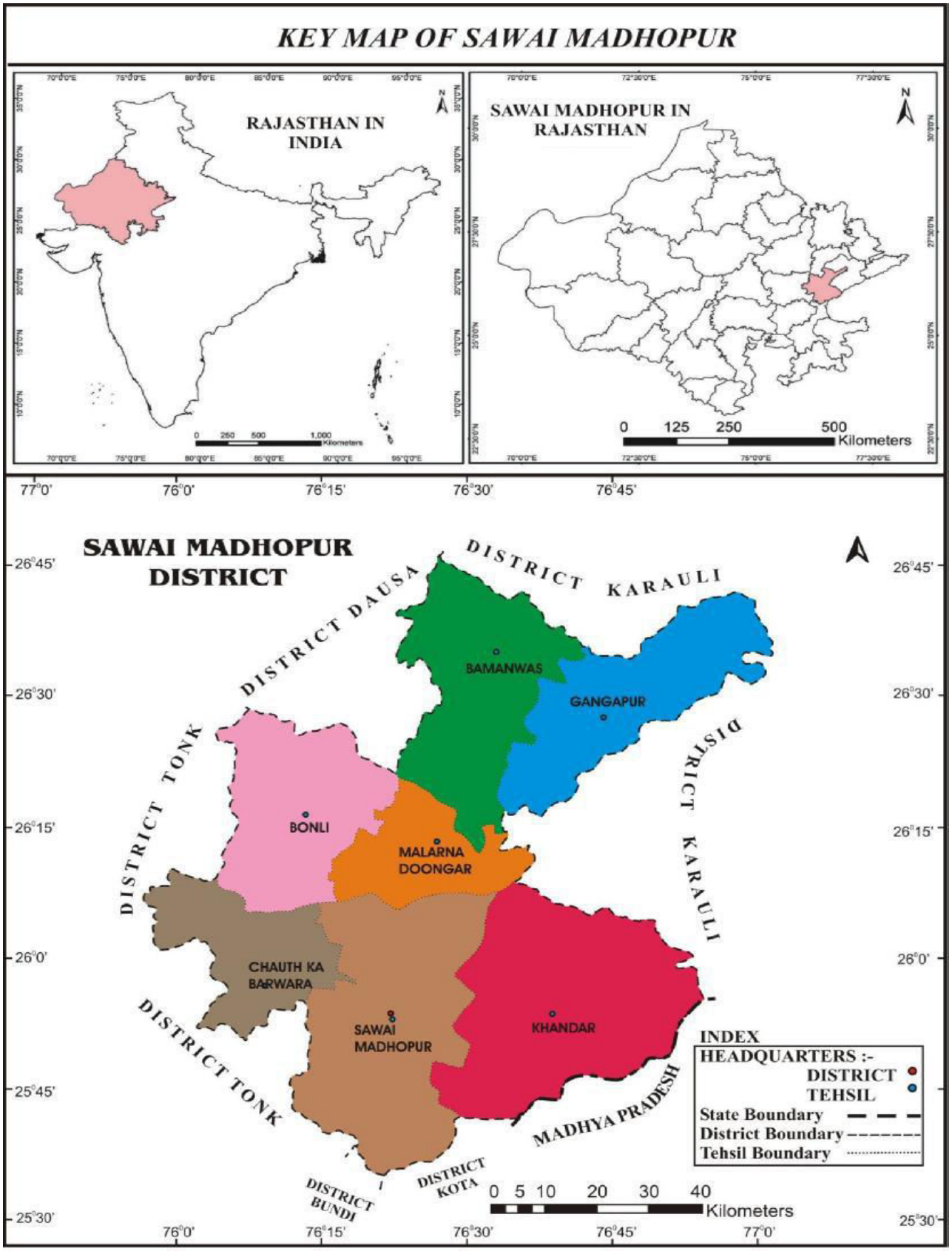

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

साहित्य समीक्षा :

1. **पी. एल. मालिवाल (2021)** – प्रस्तुत पुस्तक "जैविक खेती के सिद्धान्तरू पाठ्यपुस्तक" में जो अध्याय सम्मिलित किये गये हैं वे हैं जैविक खेती एक परिचय, भारत में जैविक कृषि प्रोत्साहन, जैविक पारिस्थितिकी तंत्र एवं अवधारणा, जैविक पोषक तत्व संसाधन व उनका प्रबन्धन, कीट एवं व्याधि प्रबन्धन, खरपतवार प्रबन्धन, जैविक उत्पादन प्रमाणीकरण प्रक्रिया एवम् मानक, जैविक उत्पाद प्रसंस्करण एवम् लेबलिंग, जैविक खेती की आर्थिक व्यहार्यता, जैव उत्पाद विपणन एवं निर्यात संभावनाएं। पुस्तक में कठिन विषयों को उदाहरणों, प्रयोगों व प्रतीकान्मक चित्रों द्वारा सरल सुबोध बनाने का यथासंभव प्रयास किया गया है।
2. **डॉ. महेश दवंगे (2022)** अपने लेख 'ओह रे! किसान' की यात्रा से गुजरते हुएष में वर्णन करते है की कृषि प्रधान देश होने पर भी भारत में किसानों की हालत बहुत सोचनीय है। सरकार एवं सरकारी अधिकारियों की उदासीनता ने उनकी समस्याओं में इजाफा ही किया है। प्रेमचंद के समय से अब तक किसान मजदूर बनने की दिशा में अग्रसर है। बाजार एवं पूँजी की नजर अब खेती पर लगी है । अगर किसानों की हालत में सुधार नहीं हुआ तो वह दिन दूर नहीं जब मल्टीनेशनल कंपनियाँ खेती करेंगी और मनचाहे दाम पर अनाज बेचेगी। अतः किसान और किसानी बचाना हमारी जिम्मेदारी है। प्रस्तुत लेख में इसी यथार्थ की ओर संकेत किया गया है। खेती में बढ़ती रासायनिक प्रक्रिया ने मिट्टी की उर्वरता एवं उपजाऊ क्षमता को भी बाधित किया है। अतः पारंपरिक खेती मिट्टी की उर्वरता एवं फसल की शुद्धता की दृष्टि से उपयोगी है। 'ओह रे ! किसान' किताब में रासायनिक खेती के दुष्परिणाम एवं जैविक खेती की उपयोगिता को रेखांकित किया है। भारत का कृषिइतिहास हजारों साल पुराना है। सदियों से जैविक एवं पारंपरिक खेती ही इसका आधार रहा है। वर्तमान समय में भी इस पारंपरिक एवं समृद्ध कृषि परंपरा को आधार बनाकर भारतीय किसान जीवन को सुजलाम–सुफलाम बनाया जा सकता है।
3. **डॉ. सत्यवान सौरभ (2023)** की पुस्तक खेती और किसानी भारतीय किसानों के संघर्ष और वर्तमान समस्याओं का ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसमें जैविक कृषि के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है। वे इस बात से दुखी हैं कि देश में किसान आज मुफलिसी के दौर में है। इसलिए ये कृति दुनिया के किसानों व भारत के किसानों को समर्पित की गई है। पुस्तक में किसानों, खेती और पशुपालन से जुड़े मुद्दों को लिया गया हैं। मसलन डेयरी विकास और पशुधन, जड़ी–बूटियों की खेती, महँगी होती खाद, खेतों में करंट से मरते किसान, बाढ़ जोखिम, आवारा मवेशी, घटिया दाम, गायों की हो रही है दुर्दशा, वायु की गुणवत्ता, टिकाऊ हरित पर्यावरण, "पोषण का पावरहाउस" बाजरा, मृदा क्षरण, भूजल उपयोग, आयुर्वेद और योग, आपदा जोखिम, पशु चिकित्सा, कृषि रोबोट, भारत का पशुधन, भूकंप, तपती धरती,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

संकट में अस्तित्व, कुदरत की पीर, फूड फोर्टिफिकेशन, पोषण की कमी, सर्दियों में बिगड़ती हवा की गुणवत्ता, पर्यावरण को बचाने के लिए पंचामृत मंत्र, वैदिक संस्कृति, प्रकृति संरक्षण, जल बचत–प्रबंधन, रोजगार सृजन, अमृत सरोवर, भविष्य की जैविक कृषि, पशु चिकित्सकों को व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण की जरूरत, जड़ी–बूटियों की खेती बड़ा स्रोत, मोटे अनाजों को महत्त्व, भूजल प्रदूषण की समस्या, भुखमरी, पशु मेले पशुपालन की स्वरोजगार में महत्त्वपूर्ण भूमिका आदि।

4. **इंजी . राजेश पाठक (2024)** का लेख जैविक खेती– स्थायी समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम इस संदर्भ में एक अति महत्त्वपूर्ण स्रोत है। लेखक इस लेखके अंतर्गत यह बताने का प्रयास करता है की आज के समय में, जब किसान अपने फसलों की सुरक्षा के लिए रासायनिक कीटनाशकों और खादों पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं, जैविक खेती एक प्रभावी विकल्प के रूप में उभरी है। जैविक खाद से उगाई गई फसलें प्राकृतिक रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता से लैस होती हैं, जिससे इनका रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, फसलें हानिकारक रसायनों से मुक्त रहती हैं, जो न केवल किसान के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि उपभोक्ताओं के लिए भी सुरक्षित है।

जैविक कृषि के लाभ :

- **मिट्टी की उर्वरता में सुधार** – जैविक कृषि में कंपोस्ट, हरी खाद, और जैविक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है, जो मिट्टी की संरचना और उर्वरता को बढ़ाते हैं।
- **पर्यावरण संरक्षण** – रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग में कमी से जल, मिट्टी, और वायु प्रदूषण कम होता है।
- **स्वास्थ्य लाभ** – जैविक उत्पाद रासायनिक अवशेषों से मुक्त होते हैं, जिससे उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- **आर्थिक लाभ** – जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों को उच्च मूल्य प्राप्त होता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

सवाईमाधोपुर जिले में जैविक कृषि की संभावनाएं :

सवाई माधोपुर जिले में जैविक कृषि की निम्नलिखित सभांवनाए व्याप्त है–

- **जलवायु और मिट्टी की उपयुक्तता –** सवाईमाधोपुर जिले की जलवायु और मिट्टी जैविक कृषि के लिए अनुकूल है। यहां की मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ाने की क्षमता है।
- **स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता –** जिले में गोबर, कंपोस्ट, और अन्य जैविक सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता है, जो जैविक कृषि के लिए आवश्यक है।
- **सरकारी योजनाएं –** भारत सरकार और राजस्थान सरकार द्वारा जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जैसे परंपरागत कृषि विकास योजना (च्ज्ञटल) और जैविक खेती मिशन।
- **बाजार की संभावनाएं –** जैविक उत्पादों की मांग देशी और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में तेजी से बढ़ रही है। सवाईमाधोपुर जिले के किसान इस मांग का लाभ उठा सकते हैं।

जिले में कृषि को बढ़ावा देने के लिए भारत और राजस्थान सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रमुख योजनाएँ :

भारत सरकार और राजस्थान सरकार ने जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करना, उन्हें तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करना, और जैविक उत्पादों के लिए बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करना है। यहां कुछ प्रमुख योजनाओं का विवरण दिया गया है–

भारत सरकार की योजनाएं – जिले में जैविक कृषि के उत्थान हेतु केंद्र सरकार द्वारा निम्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है–

परंपरागत कृषि विकास योजना :

उद्देश्य– जैविक खेती को बढ़ावा देना और किसानों को रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से दूर करना।

मुख्य विशेषताएं– इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- किसानों को जैविक खेती के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
- क्लस्टर आधारित दृष्टिकोण अपनाया जाता है, जिसमें 50 एकड़ के क्लस्टर बनाए जाते हैं।
- प्रति एकड़ 50,000 रुपये की सहायता (3 वर्षों के लिए)।
- प्रमाणीकरण और विपणन सहायता भी प्रदान की जाती है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

राष्ट्रीय जैविक खेती मिशन–

उद्देश्य–स्थायी कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना और जैविक खेती को प्रोत्साहित करना।

मुख्य विशेषताएं– इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और जल संरक्षण के लिए उपाय।
- जैविक खेती के लिए प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता।
- किसानों को जैविक उर्वरक और जैविक कीटनाशक उपलब्ध कराना।

भारतीय जैविक प्रमाणन योजना–

उद्देश्य– जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण को बढ़ावा देना।

मुख्य विशेषताएं– इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- जैविक उत्पादों के लिए प्रमाणीकरण प्रक्रिया को सरल बनाना।
- प्रमाणित जैविक उत्पादों को बाजार में विशेष पहचान दिलाना।

राजस्थान सरकार की योजनाएं – सवाई माधोपुर जिले में जैविक कृषि के विकास हेतु राजस्थान सरकार द्वारा भी विभिन्न प्रकार की योजनाएँ चलाई जा रही है जिससे की कृषक अधिक से अधिक जैविक फसलों का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित हो। जिले में राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रमुक्ज योजनाओं का विवरण निम्न प्रकार से है–

राजस्थान जैविक खेती मिशन –

उद्देश्य– राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा देना और किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करना।

मुख्य विशेषताएं– इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- किसानों को जैविक खेती के लिए वित्तीय सहायता।
- प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता।
- जैविक उत्पादों के लिए बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करना।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

राजस्थान जैविक प्रमाणन योजना–

उद्देश्य– जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण को बढ़ावा देना।

मुख्य विशेषताएं– इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- जैविक उत्पादों के लिए प्रमाणीकरण प्रक्रिया को सरल बनाना।
- प्रमाणित जैविक उत्पादों को बाजार में विशेष पहचान दिलाना।

राजस्थान जैविक खेती प्रोत्साहन योजना–

उद्देश्य – जैविक खेती को बढ़ावा देना और किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करना।

मुख्य विशेषताएं – इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- किसानों को जैविक खेती के लिए वित्तीय सहायता।
- प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता।
- जैविक उत्पादों के लिए बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करना।

अन्य योजनाएं

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

उद्देश्य – कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देना।

मुख्य विशेषताएं – इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष परियोजनाएं।
- किसानों को वित्तीय और तकनीकी सहायता।

नीम कोटेड यूरिया–

उद्देश्य – रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करना और जैविक खेती को बढ़ावा देना।

मुख्य विशेषताएं – इस योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

- नीम कोटेड यूरिया का उपयोग करने से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव कम होता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

चुनौतियां :

जिले में जैविक कृषि के विकास में निम्नलिखित बाधाएँ अथवा चुनौतियाँ है–

- **जागरूकता की कमी –** किसानों में जैविक कृषि के लाभ और तकनीकों के बारे में जागरूकता की कमी है।
- **प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान –** जैविक कृषि के लिए विशेष प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है, जो अभी तक सभी किसानों को उपलब्ध नहीं है।
- **प्रमाणन की प्रक्रिया –** जैविक उत्पादों को प्रमाणित करने की प्रक्रिया जटिल और महंगी है, जो छोटे किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती है।
- **बाजार तक पहुंच –** जैविक उत्पादों के लिए उचित बाजार तक पहुंच की कमी भी एक समस्या है।

सुझाव और रणनीतियां :

जिले में जैविक कृषि के विकास में आने वाली उपरोक्त बाधाओं अथवा चौनौतियों का निराकरण निम्न उपायों के माध्यम से किया जा सकता है–

- **जागरूकता अभियान –** किसानों को जैविक कृषि के लाभ और तकनीकों के बारे में जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण शिविर और कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए।
- **सरकारी सहायता –** सरकार को जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, और तकनीकी सहायता प्रदान करनी चाहिए।
- **प्रमाणन प्रक्रिया को सरल बनाना –** जैविक उत्पादों के प्रमाणन की प्रक्रिया को सरल और सस्ता बनाया जाना चाहिए ताकि छोटे किसान भी इसे अपना सकें।
- **बाजार संपर्क –** जैविक उत्पादों के लिए बाजार तक पहुंच बढ़ाने के लिए सहकारी समितियों और निजी कंपनियों के साथ साझेदारी की जानी चाहिए।
- **गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका –** गैर–सरकारी संगठनों को जैविक कृषि के प्रसार और किसानों के प्रशिक्षण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

निष्कर्ष :

सवाईमाधोपुर जिले में जैविक कृषि के विकास की अपार संभावनाएं हैं। यह न केवल किसानों की आय में वृद्धि कर सकता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और स्थायी कृषि विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। हालांकि, इसके लिए जागरूकता, प्रशिक्षण, सरकारी सहायता, और बाजार तक पहुंच जैसे कारकों पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि इन चुनौतियों को दूर किया जाए, तो सवाईमाधोपुर जिला जैविक कृषि के क्षेत्र में एक मॉडल के रूप में उभर सकता है।

संदर्भ :

1. भारत सरकार, कृषि मंत्रालय। (2020)। परंपरागत कृषि विकास योजना (च्ज्ञटल)।
2. राजस्थान सरकार, कृषि विभाग। (2019)। जैविक खेती मिशन।
3. फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (FAO)। (2018)। जैविक कृषिरू लाभ और चुनौतियां।
4. सिंह, आर. (2017)। राजस्थान में जैविक कृषि की संभावनाएं। कृषि शोध पत्रिका, 45(2), 123–130।
5. मेहता, पी. (2016)। जैविक कृषि और पर्यावरण। पर्यावरण एवं विकास, 12(3), 45–52।

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com